तुलसीदास

काव्यांश 1

विषय-

1. 'काह कहिअ किन', 'सेवकु सो', 'करि करिअ', 'सहसबाहु सम सो', 'बिलगाउ बिहाइ' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद में लिखा गया है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. व्यंग्यात्मक शैली अपनाई गई है।

काव्यांश 2

विषय-

1. 'हसि हमरे', 'काज करिअ कत', 'सठ सुनेहि सुभाउ', 'बालकु बोलि बधौं', 'जड़ जानहि', 'बाल ब्रह्मचारी', 'भुजबल भूमि भूप', 'बिपुल बार' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।

काव्यांश 3

विषय-

1. 'मुनीसु महाभट मानी', 'कुम्हड़बतिया कोउ', 'कछु कहा', 'कछु कहहु', 'पा परिआ', 'कोटि कुलिस', 'धरहु धनु', 'सुनि सरोष' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. 'पुनि पुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
5. 'कुम्हड़बतिया' देशज शब्द है। इसका बहुत सुंदर प्रयोग किया गया है।
6. व्यंजना शब्द शक्ति का सुंदर प्रयोग है।
7. मुहावरा का प्रयोग किया गया है।
8. 'कोटि कुलिस सब बचनु तुम्हारा' में उपमा अलंकार है।
9. वीर रस का समावेश है।

काव्यांश 4

विषय-

1. 'कुटिलु कालबस', 'निपट निरंकुसु', 'बहु बरनी', 'कछु कहहू', 'रिस रोकि दुसह दुख', 'सूर समर करनी करहिं कहि', 'करनी करहिं कहि', 'कायर कथहिं' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।

2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. परशुराम पर व्यंग्य किया गया है।
5. 'भानुबंस राकेश' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

काव्यांश 5

तुलसीदास

काव्यांश 1

विषय-
1. 'काह कहिअ किन', 'सेवकु सो', 'करि करिअ', 'सहसबाहु सम सो', 'बिलगाउ बिहाइ' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद में लिखा गया है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. व्यंग्यात्मक शैली अपनाई गई है।

काव्यांश 2

विषय-
1. 'हसि हमरे', 'काज करिअ कत', 'सठ सुनेहि सुभाउ', 'बालकु बोलि बधौं', 'जड़ जानहि', 'बाल ब्रह्मचारी', 'भुजबल भूमि भूप', 'बिपुल बार' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।

काव्यांश 3

विषय-
1. 'मुनीसु महाभट मानी', 'कुम्हड़बतिया कोउ', 'कछु कहा', 'कछु कहहु', 'पा परिआ', 'कोटि कुलिस', 'धरहु धनु', 'सुनि सरोष' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. 'पुनि पुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
5. 'कुम्हड़बतिया' देशज शब्द है। इसका बहुत सुंदर प्रयोग किया गया है।
6. व्यंजना शब्द शक्ति का सुंदर प्रयोग है।
7. मुहावरा का प्रयोग किया गया है।
8. 'कोटि कुलिस सब बचनु तुम्हारा' में उपमा अलंकार है।
9. वीर रस का समावेश है।

काव्यांश 4

विषय-

1. 'कुटिलु कालबस', 'निपट निरंकुसु', 'बहु बरनी', 'कछु कहहू', 'रिस रोकि दुसह दुख', 'सूर समर करनी करहिं कहि', 'करनी करहिं कहि', 'कायर कथहिं' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. परशुराम पर व्यंग्य किया गया है।
5. 'भानुबंस राकेश' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

काव्यांश 5

विषय-

1. 'तुम्ह तौ', 'देइ दोसु', 'बालकु बधजोगू', 'बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा', 'कौसिक कहा', 'गुन गनहिं', 'केवल कौसिक', 'काटि कुठार कठोरे' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. बार बार में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
5. 'हाँक जनु लाभ' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।
6. 'हरियरे सूझ' मुहावरे का सटीक प्रयोग किया है।

काव्यांश 6

विषय-

1. 'ब्याज बहु बाढ़ा', 'ब्यवहरिआ बोली', 'सब सभा', 'बिप्र बिचारि बचौं', 'बचन बोले' इत्यादि में अनुप्रास अलंकार है।
2. चौपाई तथा दोहा छंद का प्रयोग है।
3. अवधी का शुद्ध तथा साहित्यक रूप विद्यमान है।
4. 'हाय हाय' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार विद्यमान है।
5. 'जल सम बचन' में उपमा अलंकार है।